

अभिप्रेरित व्यवहार की कसौटी

(Criteria of Motivated Behaviour)

मनोवैज्ञानिकों ने इस बात पर भी गंभीरतापूर्वक विचार किया है कि हम किस तरह के व्यवहार को अभिप्रेरित (motivated) व्यवहार कहेंगे तथा वे कौन-कौन कसौटियां हैं जिनके आधार पर हम यह कह सकते हैं कि अमुक व्यवहार अभीप्रेरित व्यवहार है। Whittaker (1970) कथा Lindsey, Hall & Thompson(1978) ने अभिप्रेरित व्यवहार के निम्नांकित चार कसौटियां बतलाया है जिसके आधार पर हम अभिप्रेरित व्यवहार की पहचान आसानी से कर सकते हैं-

1. अभिप्रेरित व्यवहार चक्रीय (cyclic) होता है। दूसरे शब्दों में, यह कहा जा सकता है कि किसी व्यवहार को अभिप्रेरित व्यवहार कहलाने के लिए चक्रीय (cyclic) होना आवश्यक है। इस चक्र (cycle) के अनुसार व्यक्ति में पहले एक खास आवश्यकता (need) तथा प्रणोद (drive) उत्पन्न होता है। इससे व्यक्ति में क्रियाशीलता बढ़ जाती है और वह लक्ष्य की ओर अग्रसर होने लगता है। अंत में लक्ष्य की प्राप्ति में आवश्यकता की पूर्ति हो जाती है तथा प्रणोद कम हो जाता है। अतः अभिप्रेरित व्यवहार से व्यक्ति का व्यवहार एक क्रम से आगे बढ़ता है और पुनः दूसरी बार उत्पन्न होने पर वही क्रम

बना रहता है। इस तरह से यह कहा जाता है कि अभिप्रेरित व्यवहार चक्रीय होता है।

2. किसी व्यवहार को अभिप्रेरित व्यवहार कहलाने के लिए यह भी आवश्यक है कि वह चयनात्मक (selective) हो। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि अभिप्रेरित व्यवहार चयनात्मक होते हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति भूखा है परंतु प्यासा नहीं है तो वह हमेशा भोजन ही प्राप्त करना चाहेगा पानी नहीं। उसका व्यवहार भोजन करने की ओर अग्रसर होगा दूसरी ओर नहीं।
3. अभिप्रेरित व्यवहार तुलनात्मक रूप से सक्रिय (active) तथा सतत (persistent) होता है। प्रयोगात्मक अध्ययनों से यह स्पष्ट हो गया है कि जैसे- जैसे वंचन

(deprivation) की अवधि बढ़ती है, एक खास सीमा तक व्यक्ति में क्रियाशीलता भी बढ़ जाती है। अतः अभिप्रेरित व्यवहार सक्रिय होता है। इतना ही नहीं, एक अभिप्रेरित व्यक्ति का व्यवहार तुरंत ही समाप्त नहीं हो जाता है। लक्ष्य तक पहुंचने में चाहे उसे जितनी भी कठिनाई क्यों ना हो, वह अपना कोशिश जारी रखता है। अतः अभिप्रेरित व्यवहार में क्रियाशीलता (activity) के अलावा सातत्य (persistence) का भी गुण होता है।

4. अभिप्रेरित व्यवहार में समस्थिति (homeostasis) होती है। शरीर के भीतर आंतरिक संतुलन की स्थिति को समस्थिति की संज्ञा दी जाती है। उदाहरणस्वरूप, जब

व्यक्ति को प्यास लगती है, तो इससे उसके भीतर में एक तनाव उत्पन्न होता है जिसके फलस्वरूप व्यक्ति पानी की खोज करता है और पानी मिलने पर फिर तनाव कम हो जाता है। तनाव उत्पन्न होने से समस्थिति में असंतुलन हो जाता है अर्थात् शरीर के भीतर असंतुलन उत्पन्न हो जाता है और तनाव समाप्त हो जाने पर (अर्थात् पानी मिल जाने पर जब प्यास बुझ जाती है) समस्थिति कायम हो जाती हैं। अतः किसी व्यवहार को अभिप्रेरित व्यवहार कहलाने के लिए यह भी आवश्यक है कि उसमें समस्थिति कायम करने का गुण है।

अतः यदि कोई व्यवहार ऊपर बताए गए चारों को कसौटियों पर सही उतरता है,

तो उसे हम निश्चित रूप से अभिप्रेरित
व्यवहार (motivated behaviour) की संज्ञा
देंगे।